Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 3149–3153

CHARACTERISTICS OF THE SOCIETY OF THAT TIME IN THE CONTEXT OF THE PLAY MUDRARAKSHAS

मुद्राक्षस नाटक के संदर्भ में उस समय के समाज की विशेषताएँ

Dr. Renu Shukla[1], Vithika Das Vairagya [2]

[1] Assistant Professor, Department of Sanskrit and Oriental Languages, Dr. C. V. Raman University, Kargiroad, Kota, Bilaspur (CG), India
[2] Research Scholar, Department of Sanskrit and Oriental Languages, Dr. C. V. Raman University, Kargiroad, Kota, Bilaspur (CG), India

ABSTRACT

English: The play Mudrarakshasam is an extraordinary play among Sanskrit plays. This play is a heroic play based on a political story. It is not necessary to consider any play as a mere story, because through every play the playwright presents some educational topic to the audience, which becomes very important for the audience. The play Mudrarakshasam written by Vishakhadatta is no exception. Through this play, the playwright has beautifully depicted social images, through which we get a clear idea of the state of society at that time. We cannot live without society because we are social beings and we learn through experience what society accepts. Just as Vishakhadatta has highlighted the social characteristics through the play Mudrarakshasam, we can learn about the social characteristics of that time through them, on the other hand, I believe that by adopting the characteristics that the society of that time finds acceptable, we can make the society more prosperous.

Hindi: मुद्राराक्षसम् नाटक संस्कृत नाटकों में एक असाधारण है। यह नाटकएक राजनीतिक कहानी पर आधारितवीररस प्रधान नाटक है। किसी भीनाटक महज कहानी समझना जरूरी नहीं हैं, क्योंकि प्रत्येक नाटक के माध्यम से नाटककार दर्शकों के समक्ष कोई न कोई शिक्षाप्रत विषय प्रस्तुत करता है, जो दर्शकों के लिए बहुत आवश्यक हो जाता है। विशाखदत्त द्वारा लिखित नातक मुद्राराक्षसम् कोई अपवाद नहीं है। इस नाटक के नाटक माध्यम से नाटककार ने सामाजिक छवियों का सुन्दर चित्रण किया है, जिसके माध्यम से उस समय के समाज की स्थिति का स्पष्ट विचार प्राप्त होता है। हम समाज के बिना नहीं रह सकते क्योंकि हम सामाजिक प्राणी हैं और समाज जो स्वीकार करता है, हम अनुभव के माध्यम से उसे सीखते हैं। जिस प्रकार विशाखदत्त ने मुद्राराक्षसम् नाटक के माध्यम से जिन सामाजिक विशेषताओं को उजागर किया है, उनके माध्यम से हम उस समय की सामाजिक विशेषताओं के बारे में जान सकते हैं, वहीं दूसरी ओर मेरा मानताहै कि उस समय के समाज को जो विशेषताएं स्वीकार्य लगती हैं, उन्हें अपनकार हम समाज को और अधिक समृद्ध बना सकते हैं।

Corresponding Author
Dr. Renu Shukla,
shukladrrenu@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5684

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

1. प्रस्तावना

मुद्राराक्षसम् नाटक संस्कृत नाटकों में एक असाधारण है। यह नाटकएक राजनीतिक कहानी पर आधारितवीररस प्रधान नाटक है। किसी भीनाटक महज कहानी समझना जरूरी नहीं हैं, क्योंकि प्रत्येक नाटक के माध्यम से नाटककार दर्शकों के समक्ष कोई न कोई शिक्षाप्रत विषय प्रस्तुत करता है, जो दर्शकों के लिए बहुत आवश्यक हो जाता है। विशाखदत्त द्वारा लिखित नातक मुद्राराक्षसम् कोई अपवाद नहीं है। इस नाटक के नाटक माध्यम से नाटककार ने सामाजिक छवियों का सुन्दर चित्रण किया है, जिसके माध्यम से उस समय के समाज की स्थिति का स्पष्ट विचार प्राप्त होता है। हम समाज के बिना नहीं रह सकते क्योंकि हम सामाजिक प्राणी हैं और समाज जो स्वीकार करता है, हम अनुभव के माध्यम से उसे सीखते हैं। जिस प्रकार विशाखदत्त ने मुद्राराक्षसम् नाटक के माध्यम से जिन सामाजिक विशेषताओं को उजागर किया है, उनके माध्यम से हम उस समय की सामाजिक

How to cite this article (APA): Shukla, R., and Vairagya, V.D. (2024). Characteristics of the Society of that time in the Context of the Play Mudrarakshas. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5*(1), 3149–3153. doi: 10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5684

विशेषताओं के बारे में जान सकते हैं, वहीं दूसरी ओर मेरा मानताहै कि उस समय के समाज को जो विशेषताएं स्वीकार्य लगती हैं, उन्हें अपनकार हम समाज को और अधिक समृद्ध बना सकते हैं।

2. जाति प्रथा

विशाखदत्त के समय में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र की चार मुख्य जातियों के अतिरिक्त कायस्थ और चांडाल जैसे जनजातीय विभाजन भी थे। ब्राह्मण समाज में सर्वाधिक सम्मानित थे। ब्राह्मण चाणक्य ने चंद्रगुप्त को बार बार वृषल कहकर संबोधित किया। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को वृषल इसलिए कहा क्योकि वह शुद्र स्त्री से पैदा हुआ था। इसके अलावा अमात्य राक्षस के शब्दों से चन्द्रगुप्त के निम्न वंश का भी पता चलता है। इस संबंध में कहा गया-

“पृथिव्यां किं दग्धाः प्रथितकुलजा भुमिपतयः।
पतिं पापे मौर्यंयदसि कुलहीनं कृतवती”॥

है पापिनी, मुरा के पुत्र का कोई परिवार नहीं है, यदि उसे पूर्व पति रूप में स्वीकार कर लिया जाता, तो मैं पुछता हूँ, क्यासंसार के सभी महान राजा चाणक्य की अग्नि में भस्म हो गए थे? कायस्थों को समाज में वैश्यों से अधिक सम्मान प्राप्त था। वे फाइलें, दस्तावेज और महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्य संभालते थे। कायस्थ अचल नामक व्यक्ति की चाणक्य का फाइलकीयर नियुक्त किया गया था। जिस प्रकार ब्राह्मणों को प्रमुख जातियों में सभी स्तरों पर सम्मान प्राप्त था, उसी प्रकार कायस्थों को उस समय के समाज में ब्राह्मणों के बाद दूसरे स्थान पर सम्मान प्राप्त था। नाटक में चर्चित जाति व्यवस्था से यह स्पष्ट है कि उस समय के समाज में जाति व्यवस्था अपने चरम परथी।

3. गुणवत्ता और कार्य के संदर्भ में व्यावसायिकता-

मनु ने अपनी मनुसंहिता में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य पौर शुद्र के लिए अलग अलग व्यवसायों का उल्लेख किया है। ब्राह्मणों के व्यवसायों के बारे में वे कहते है-

अध्यापनमध्यायनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पत।।

अर्थात् ब्रह्मा ने ब्राह्मणों के लिए छ कार्य बाताऐं हैं- अध्यापन, स्वाध्याय, यज्ञ, अर्पण, दान ओर लेना।

क्षत्रियों के वारे में वे कहते हैं-

“प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समागतः”॥

अर्थात ब्रह्मा ने क्षत्रियों के लिए प्रजा की रक्षादान, यज्ञ, अध्ययन, नृत्य, गायन तथा भोगों से अनासक्ति का संक्षेप में विधान किया है। वैश्य के व्यवसायों के बारे में बवे कहते हैं-

“पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समागतः”॥

अर्थात् पशुओं की रक्षा,दान,यज्ञ,अध्ययन,व्यापार,व्याज पर धन उधार देना ओर कृषि करना ब्रह्मा ने वैश्यों के लिए निर्धारित किया था।

शूद्र के व्यवसायों के बारे में वे कहते हैं-

“एकमेव तु शुद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एषामेव वर्णानां शुश्रावामेबनसुयया”॥

अर्थात् भगवान ब्रह्मा ने शुद्रों के लिए एक ही कार्य, निर्दिष्ट किया है, वह है ब्राह्मण, क्षेत्रिय, और वैश्य की विना किसी आलोचना के सेवा करना।

हालांकि मुद्राराक्षसम् नातक के लेखक ने मनु की तरह संकीर्ण विचारधारा के आधार पर अपना पेश नहीं चुना था। उन्होंने योग्यता और काम पर भरोसा करके जीविकोपार्जन परजोर दिया और इसके प्रमाण बार बार मिलते हैं। कई ब्राह्मण चाणक्य के जासूस थे। यद्यपि वह अमात्य राक्षस जाति का ब्राह्मण था, फिर भी वह क्षेत्रियों के समान युद्ध कौशल में कुशल था। इसका मतलब यह है कि उस समय जाति के आधार पर नहीं बल्कि योग्यता के आधार पर जीवकोपार्जन पर जोर दिया जाता था।

4. सती प्रथा में छूट या स्वैच्छिक इच्छामृत्यु

यद्यपि उस समय समाज में सती प्रथा प्रचलित थी, परन्तु कोई बाध्यता नहीं थी। मृतक की पली कभी-कभी नाबालिग बच्चों के भरण-पोषण के लिए, ज्ञानबुझकर इच्छामृत्यु से वच सकती है। यह जानते हुए भी कि चंदनदास की पत्नी की मृत्यु फांसी स्थल पर ही हो जाएगी, उन की पत्नी ने अपने पति से बोलने की अनुमति मांगी-“भर्तुश्चरणावनुगच्छान्त्या आत्मानुग्रह भवत्विति” हालाँकि, यह प्रथा अनिवार्य नहीं थी। इस प्रथा में धील दिए जाने के कारण ही मलयकेतु माताएं अपने पतियों की मृत्यु के बाद सामान्य जीवन जीने का लगीं।

5. अनेक देवताओं की साधना

यह ज्ञात है कि उस समय के समाज में अनेकदेवता प्रचलित था। उदाहरण के लिए, नाटक के आरंभ में ही नाटककार ने शिव की महानता का बयान नंदीपद से किया है। दुसरी ओर, उन्होंने भरतवाका में विष्णु के वराह रूप की महानता का वर्णन किया है। उन्होंने शरद ऋतु की तुलना शिव की भस्म से की। उन्होंने इस संबंध में कहा-

“आकाशं काशपुष्पच्छविमभिभवता भस्मना शुक्लयन्ती।
शीतांशोरंशुजालैर्जलधरमलिनांक्लिशन्ती कृत्तिभैमीम्।
कापालीमुद्वहन्ती स्रजमिव धवलां कौमुलीमिलपुर्वा
हास्यश्रीराजहंसा हरतु तनुरिख क्लेशमेशी शरद्वः”॥

अर्थात् तांडव में लीन भगवान शिव का शरीर अद्भुत शरद ऋतु के समान है। शरद ऋतु में आकाशमण्डल पुष्प की छवि में श्वेत हो जाता है, तांडव के दौरान शिव के शरीर से पुष्प से भी अधिक श्वेत राख उड़ती है और आकाशमण्डल को श्वेत कर देती है। शरद ऋतु में नीले बादल चंद्रमा की किरणों में सफेद हो जाते हैं और शिव के शरीर और सिर पर स्थित चंद्रमा प्रकाश में नहा जाते हैं जिससे उनकी मलिन क्या का उत्तरी भाग भगवान के बादलों के समान सफेद हो जाता है। शरद ऋतु के शरीर पर श्वेत प्रकाश चमकता है, और नरक के पंखों की सफेत माला प्रभु के शरीर को सुशोभित करती है। भगवान जोरदार हंसी शरद ऋतु के शरीर को राजसी हंस की सुंदरता के समान सुशोभित कर रही है। और शिवका शरीर आपके काष्टों को दूर करे।

एक अन्य लोक में उन्होंने भगवान विष्णु के सर्प की विशाल शय्या पर शयन की पौराणिक कथा का वर्णन किया है। उन्होंने इस संबंध में कहा-

“प्रत्यग्रोन्मेषजिह्मा क्षणमनभिमुखी रत्नदीपप्रभाणा-
मात्मव्यापारगुर्वी जनितजलल वा जम्भितैः साङ्गभङ्गैः।
नागाङ्गं मोक्तुमिच्छोः शयनमुरु फणाचक्रवालोपधानं
निद्राच्छेदाभिताम्रा चिरमवतु हरेर्दृष्टिराकेकरारावः”॥

इसमें मृत्यु के देवता यम के भय का भी उल्लेख है। वह अन्य देवताओं के भक्तों को भी मारता है- “एष खल्वन्यभक्तानां हरति जीवं परिस्फरन्तम्” इति।

इस प्रकार उन्होंने बार बार विभिन्न संदर्भों में विभिन्न देवताओं का उल्लेख करते हुए अनेक देवताओं की स्थिति स्पष्ट की।

6. हिंदु धर्म के साथ साथ अन्य धर्मों का प्रभाव

हिंदु धर्म के साथ साथ बोद्ध और जैन धर्मका भी कुछ हद तक उल्लेख किया गया है। यद्यपि यात्रा के दौरान बौद्ध भिक्षुओं का आना अशुभ माना जाताथा, लेकिन नाटक में अन्यत्र बौद्धों की लाभदायक सलाह और शिक्षाओं का समाज के लोगों द्वारा सम्मान किया जाता था। जैन धर्म के लोगों को बौद्ध धर्म की तुलता में कुछ सम्मान कम दिया जाता था। नाटक में विभिन्न धर्मो के उल्लेखसे यह स्पष्ट होता हैकि उस समय के समाज में विभिन्न धर्मो लोग रहते थे।

7. अंधविश्वास

विशाखदत्त के समय में समाज में प्रचलित अंधविश्वासों का पता उनको नाटक 'मुद्राराक्षसम्'से चलता है। सुत्रधार के कंथन से ज्ञात होता है कि चन्द्रग्रहण पाप ग्रह राहु द्वारा चंद्रमा को ग्रस लेने के परिणाम स्वरूप होता है। इस संदर्भ में सुत्रधार कहते हैं

“कुरग्रहः सकेतुश्चन्द्रं सम्पूर्णमण्डलमिदानीम्

अभिभवितुमिच्छति बलात्"॥

केतु बहुत ही टेढ़ा ग्रह है। यद्यपि चन्द्रमा का चक्कर अभी पूरा नहीं हुआ है, फिर भी वह उस पर आक्रमण करना चाहता है।

चन्द्रग्रहण के बुरे प्रभावों को दूर करने के लिए ब्राह्मणों को भोजन कराने की प्रथा थी। चन्द्रग्रहण के बुरे प्रभावों को दूर करने के लिए सुत्रधार की पत्नी नटी नेब्राह्मणों के आतिथ्य की अवस्था की। अमात्य राक्षस जैन क्षपणक और सर्प के दर्शन को अशुभ मानते थे। वह बायीं आंख के फड़कने की भी अपकुशन मानते थे। उस समय के समाज में ज्योतिष पर लोगों का गहरा विश्वास था। वे कहीं भी यात्रा करने के लिए ज्योतिष के आधार पर यात्रा करते थे। पुर्णिमा को दिन यात्रा करना अशुभ माना जाता था।

महिलाओं की स्थिति- यद्यपि मुद्राराक्षसम् नाटक में स्त्री पात्र नहीं हैं, फिर भी कहानी में बार-बार स्त्रियों का उल्लेख है, जिससे तत्कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति स्पष्ट हो जाता है।नाटक के पहले ही अंक में सूत्रधार की पत्नी कीकाहानी के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को समझा जा सकता है। इधर, सुत्रधार की अनुस्थिति में उसकी पत्नी चंद्रग्रहण की बुरी छाया को दूरकरने के लिए ब्राह्मणों के लिए भोजन की व्यवस्था करती है। नहीं की यह व्यवस्था देखकर निर्देशक सुत्रधार ने नटीसे कारण पुच्छा और कहा-

"गुणवत्युपायनिलये स्थितिहेतोः साधिके त्रिवर्गस्य।

मद्भवननीतिविद्ये कार्याकार्येद्रुतमुपेहि"॥

ओह, आप तो बहुत प्रतिभाशाली हैं, आप तरह-तरह के विचार लेकर आते हैं। मुझे अपना धर्म अर्थ और काम आपसे मिलता है। आप मेरे घर की सुरक्षा में संबंध में मेरी नैतिकता हैं, और मुझे आपसे सलाह मिलाती है कि अब क्या करना है।तो जल्दी से यहां आओ और देखते हैं। दूसरे शब्दों में कहे तो उनके कथन से यह समझा जासाकता है कि पत्नियां अपने पतियों को पारिवारिक समझाओं को सुलझाने के लिएसलाह देती थी। जब चंदनदास की पत्नी सप्तमंकमें सतीप्रथा के कारण आत्महत्या करने वाली थीं, तो उन्होंने उरके बच्चे के भविष्य के बारे में सोचते हुए उसे आत्महत्यासे दूर रखा। हालाँकि, कुछ स्थानों पर पुरुष महिलाओं के गुणों के प्रति उदासीन थे, जैसा कि राक्षस के कथन से देखा जा सकता है। इस संदर्भ में राक्षस ने कहा-

"प्रकृत्यां वा काशप्रभवकुसुमप्रान्तचपला।

पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी"॥

अर्थात् स्त्री की बुद्धि स्वाभाविक रूप से फुल की अगरबत्ती के समान चंचल होती है, वह पुरुष के गुणों को देखना नहीं चाहती, इसमें तुम्हारा दोष नहीं है, इसमें दोष तो स्त्री जाति का है।

चाणक्य ने सेवक वर्ग की तुलना स्त्रियों से की है और कहा है-

"ते भृत्या नृपतेः कलत्रमितरे सम्पत्सु चापत्सु च"॥

अर्थात् चाणक्य के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि परिवार की जिम्मेदारियों में पत्नियों को महत्व दिया जाता था, लेकिन उन्हें किसी महत्वपुर्ण कार्य की जिम्मेदारी नहीं दी जाती थी। हांलाकि महिलाएँ न केवल परिवार के अन्तर रहती थी, बल्कि विभिन्न अवसरों पर अपने पतियों के साथ बाहर भी जाती थी।

8. राजनीतिक विचारधारा

यह नाटक एक राजनीतिक कहानी पर आधारित है, जिसमें राजनीतिक विचारों के साथ साथ राजाओं और जासूसों से जुड़े कई विचारों का भी पता लगाया गयाहै। राजा राज्य के सर्वोच्च शासक थे। राजा को अपनी प्रजा पर पुरा भरोसा था। हालांकि, यदि कोई भी व्यक्ति राजा आदेशों की अवहेलना करता तो उसे मृत्युदण्ड तक की सजा दी जाती थी। राजा के इस भयंकर क्रोध के विषय में मनुसंहिता के सातवें अध्याय में मनु द्वारा कहा गया है

"एकमेव दहत्यग्निर्नरं दुरुपसर्पिणम।

कुलंदहति राजाग्निः सपशुद्रव्यसञ्चयम्"॥

अर्थात्यदि कोई व्यक्ति अग्नि के पास जाता है तो अग्नि केवल उसी को जलाती है, किन्तु राजरूप अग्नि दोषी व्यक्ति की पत्नी, पुत्र, भाई, परिवार, पशु, स्वर्ण, और रत्न आदि ही संपत्ति सहित भस्म कर देती है। राज्य के कामकाज को संचालित करने के लिए जासूस नियुक्त किये गये। गुप्तचरों की सुचना के आधार पर राजाओं के साथ संधियों और समझौते किये जाते थे। यदि मंत्री राम को कार्यों का संचालनकरते में कुशल होते थो, तो मन्त्रियों को राज्य के कार्यों के संचालन की जिम्मेदारी दी जाती थी। राज्य में मनोरंजन के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किय जाते थे और कौमुदीमहोत्सव इसका एक उदाहरण है। राजा के कर्तव्यों के निर्वहन के लिए उसके मन्त्रियों और उसके बीच अच्छे संबंध होना आवशयक है-

"अतुच्छ्रिते मंन्त्रिणि पार्थिवे च विष्टभ्य पादावुपतिष्ठते श्रीः"।

नंद वंश के मंत्री राक्षस और चंद्रगुप्त के मंत्री चाणक्यकी कार्यकुशलता से यह स्पष्ट होता है कि प्रशासन सचिवीय कार्य पर बहुत अधिक निर्भर था। हालांकि, इस नाटक में दो प्रकार के राजा पाए जा है, आत्मनिर्भर औ दुविधा। मलयकेतु और चन्द्रगुप्त इन दोनों वर्गों के राजा थे। युद्ध में हाथी,

घोड़े, रथ और पैदल सेना की चतुर्भुज सेना का प्रयोग किया जाता था। धनुष और तलवार युद्ध में प्रयुक्त होने वाले सुख्य हथियार थे। विजयी राजा पराजित राजाओं को पकड़करशपथ दिलाकर पुनः राजगद्दी पर विठादेते थें।

9. उपसंहार

समाज के इन वर्णनों के माध्यम से नाटककार उस समय के समाज का चित्रण करता है। इसस जो विशेषताएँ उभर कर आती हैं, वे यहहैं कि यद्यपि उस समय जातिगत भेदभाव प्रचलित था। फिर भी उन्होंने अपने कार्यों में जाति बजाय गणवत्ता पर जोर दिया यद्यपि महिलाओं को घर से बाहर काम करने की स्वतंत्रता नहीं थी, फिर भी वच्चों के पालन-पोषण और घरेल कामों में उन्हें बहुत महत्व दिया जाता था। समाज के इने विवरणों से जो विशेषताएँ उभर कर आती हैं, वे हैं राजकार्यों के संचालन में राजा के साथसाथ राजकार्यों से जुड़े सभी लोगों को महत्व दिया जाता है, जाति के आधार पर नहीं बल्कि योग्यता के आधार पर जीविकोपार्जन किया जाता है, अपनी जाति के लोगों को नही बल्कि दूसरी जाति के लोगों को भी सम्मान दिया जाता है, महिला औं को घर के बाहर के कामों में स्वतंत्रता न होने पर घर के कामों में पूरी स्वतंत्रता होना, राजा और मंत्रियों के बीच मधुर संबध होना। सबसे बढ़कर, यह कहा जा सकता है कि यह अच्छाई और बुराई वाला समान है। भले ही हमें इस नाटक में वर्णित कुछ सामाजिक विशेषताएँ आपत्तिजनक लगें, फिर भी हम उन विशेषताओं को शामिल करके आपन समाज को समृद्ध बना सकते हैं, जिन्होंने हमारे दिलों में जगह बना ली है।

10.तथ्यसूत्र

मुद्राराक्षसम्, द्वितीयाङ्क, श्लोकः-७।
मनुसंहिता, द्वितीयाध्याय, श्लोकः-८८।
मनुसंहिता, द्वितीयाध्याय, श्लोक-८९।
मनुसंहिता, द्वितीयाध्याय, श्लोक-९०।
मनुसंहिता, द्वितीयाध्याय, श्लोक-९१।
मुद्राराक्षसम्, तृतीयाङ्क, श्लोक-२०।
मुद्राराक्षसम्, तृतीयाङ्क, श्लोकः-२१।
मुद्राराक्षसम्, प्रथमाङ्क, श्लोक-६।
मुद्राराक्षसम्, प्रथमाङ्क, श्लोक-५।
मुद्राराक्षसम्, प्रथमाङ्क, श्लोक-७।
मनुसंहिता, सप्तमाध्याय, श्लोक-९।

ग्रन्थ सूची

मुद्राराक्षसम् सम्पादना-श्रीसीतानाथ आचार्यश्री देवकुमार दाससदेश101वि.विवेकानन्द रोड, कोलकता-700006
मुद्राराक्षसम्सम्पादना-श्री श्रीशचन्द्र चक्रवर्तीश्रीसत्यरञ्जन वन्दोपाध्यायसदेश101 वि, विवेकानन्द रोड, कोलकाता-700006
मनुसंहिता। सम्पा. अशोककुमारन्द्योपाध्याया। सदेश 101सि, विवेकानन्द रोड, कोलकाता-700006
मनुसंहिता। सम्पा. मानवेन्दुवन्द्योपाध्याय। संस्कृतपुस्तकभाण्डार, कलिकाता-700006